

Pinky Rani

Assistant Professor (Guest Faculty)

Department of Economics

Maharaja College

Veer Kunwar Singh University, Ara

Class: B.A. Economics (Part-2)

Paper: 03

Topic: Small scale Industry

Date: 09-04-2024

लघु उद्योग वे उद्योग हैं जो विनिर्माण, उत्पादन और सेवाओं के प्रतिपादन में छोटे पैमाने पर किए जाते हैं। निवेश की सीमा 5 करोड़ रुपये तक है जबकि वार्षिक मतदान सीमा 10 करोड़ रुपये तक है।

कुटीर उद्योग आमतौर पर बहुत छोटे होते हैं और कॉटेज या निवास स्थानों में स्थापित होते हैं। खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) एक वैधानिक संगठन है जो ग्रामोद्योग को बढ़ावा देता है जो कुटीर उद्योगों की भी मदद करता है।

लघु और कुटीर उद्योगों के बीच अंतर: लघु उद्योग में श्रम के बाहर श्रम का उपयोग किया जाता है जबकि कुटीर उद्योगों में पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है। SSI आधुनिक और पारंपरिक दोनों तकनीकों का उपयोग करता है। कुटीर उद्योग उत्पादन की पारंपरिक तकनीकों पर निर्भर करते हैं।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास (MSMED) अधिनियम, 2006 के प्रावधान के अनुसार सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है:

- विनिर्माण उद्यम: उद्योग विकास और विनियमन अधिनियम, 1951 की पहली अनुसूची में निर्दिष्ट किसी भी उद्योग से संबंधित वस्तुओं के निर्माण या उत्पादन में लगे उद्यम। विनिर्माण उद्यम को संयंत्र और मशीनरी में निवेश के संदर्भ में परिभाषित किया गया है।
- सेवा उद्यम: सेवाएं प्रदान करने या प्रदान करने में लगे उद्यम और उपकरण में निवेश के संदर्भ में परिभाषित किए गए हैं:

MSMEs का वर्गीकरण – तुलना

तुलना के आधार पर	संयंत्र, मशीनरी या उपकरण में निवेश
अति लघु उद्योग	1 करोड़ रुपये से अधिक और वार्षिक कारोबार; न कि उससे अधिक रु. 5 करोड़
छोटे उद्यम	संयंत्र और मशीनरी या उपकरण में निवेश: 10 करोड़ रुपये से अधिक नहीं और वार्षिक कारोबार; 50 करोड़ रुपये से अधिक नहीं
मध्यम उद्यम	संयंत्र और मशीनरी या उपकरण में निवेश: 50 करोड़ रुपये से अधिक नहीं और वार्षिक कारोबार; 250 करोड़ रुपये से अधिक नहीं

लघु उद्योगों का योगदान

आर्थिक विकास की दिशा में लघु उद्योगों के प्रमुख योगदान नीचे दिए गए हैं:

- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस) के 73वें दौर के अनुसार, (2015-16) देश में कुल 633.88 लाख गैर-कृषि एमएसएमई विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में लगे हुए हैं। जहां तक रोजगार का सवाल है, एमएसएमई क्षेत्र 11.10 करोड़ रोजगारों (विनिर्माण में 360.41 लाख, गैर-कैप्टिव बिजली उत्पादन एवं पारेषण में 0.07 लाख, व्यापार में 387.18 लाख और व्यापार में 362.22 लाख) का सृजन कर रहा है।

देश भर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अन्य सेवाओं में लाख रुपये।

- 2015-16 में लघु क्षेत्र (एमएसएमई मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 में प्रकाशित नवीनतम डेटा) ने 31.95 लाख लोगों को रोजगार प्रदान किया। यह एमएसएमई क्षेत्र में कुल रोजगार का लगभग 2.88 प्रतिशत है।
- लघु उद्योग भारत जैसे अविकसित देशों के आर्थिक विकास के लिए अनुकूल हैं। ऐसे उद्योग अपेक्षाकृत श्रम प्रधान होते हैं इसलिए वे दुर्लभ पूंजी का किफायती उपयोग करते हैं।
- लघु उद्योग धन की असमानताओं को कम करने में सहायक होते हैं।
- इन उद्योगों में पूंजी कम मात्रा में व्यापक रूप से वितरित की जाती है और इन उद्योगों के अधिशेष को बड़ी संख्या में लोगों के बीच वितरित किया जाता है।
- लघु उद्योग उद्योगों का क्षेत्रीय फैलाव करते हैं और क्षेत्रीय असंतुलन को कम करते हैं।

- लघु उद्योग पूंजी और उद्यमी कौशल सहित स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हैं, जो ऐसे उद्योगों के अभाव में उपयोग में नहीं आते।
- लघु उद्योग क्षेत्र ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और देश को औद्योगिक विकास और विविधीकरण के व्यापक माप को प्राप्त करने में सक्षम बनाया है।
- इन उद्योगों में, नियोक्ताओं और कर्मचारियों के बीच संबंध प्रत्यक्ष और सौहार्दपूर्ण होते हैं। श्रम और औद्योगिक विवादों के शोषण की शायद ही कोई गुंजाइश हो।